सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कविता

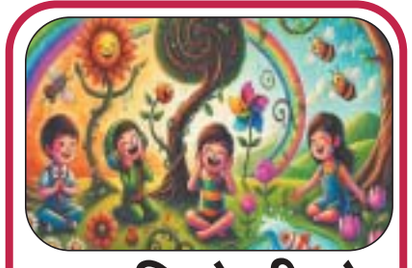

प्रकृति से सीखो

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौंरों से नित गाना.
तरु की झुकी डालियों से नित,
सीखो शीश झुकाना..

सीख हवा के झोंकों से लो,
कोमल भाव बहाना.
दूध और पानी से सीखो,
मिलना और मिलाना..

सूरज की किरणों से सीखो,
जगना और जगाना.
लता और पेड़ों से सीखो,
सबको गले लगाना..

मछली से सीखो स्वदेश के,
लिए तड़पकर मरना.
पतझड़ के पेड़ों से सीखो,
दुख में धीरज धरना..

कहानी

बंदर और ऊँट की कहानी

एक समय की बात है, एक जंगल में एक शेर राजा का दरबार लगता था. शेर बहुत न्यायप्रिय था और जंगल के सभी जानवर उसके दरबार में अपनी समस्याएँ लेकर आते थे.

एक दिन राजा शेर ने अपने दरबार में बड़ा उत्सव रखा. जंगल के सभी जानवर वहाँ आए और खूब आनंद लिया. खाना-पीना हुआ, मज़ेदार बातें हुईं और फिर सभी ने मिलकर राजा को खुश करने के लिए अलग-अलग तरह के करतब दिखाए. बंदर भी वहाँ मौजूद था. वह बहुत ही चतुर और फुर्तीला था. जब उसने देखा कि सभी जानवर राजा को खुश करने की कोशिश कर रहे हैं, तो उसने भी कुछ नया करने का सोचा.

बंदर ने जल्दी से एक मंच पर छलांग लगाई और मज़ेदार नाचना शुरू कर दिया. उसकी फुर्तीली हरकतें और अजीब-अजीब चेहरे देखकर पूरा दरबार हँसने लगा. शेर राजा भी बहुत खुश हुआ और बोला, वाह! बंदर, तुम्हारा नाच तो बहुत शानदार है. मैं तुम्हें सबसे अच्छे कलाकार का इनाम देना चाहता हूँ.

सभी जानवर तालियाँ बजाने लगे. बंदर खुश होकर उछलने-कूदने लगा. लेकिन उसी समय ऊँट चुपचाप खड़ा देख रहा था. ऊँट की जलन और उसकी गलती ऊँट को यह देखकर बहुत जलन हुई. उसने सोचा, अगर बंदर राजा को खुश कर सकता है, तो मैं भी कर सकता हूँ!

ऊँट धीरे-धीरे मंच पर चढ़ा और अपनी लंबी टांगें हिलाने लगा. वह भी नाचने की कोशिश करने लगा, लेकिन उसका शरीर बहुत भारी था और उसके पैर

जल्दी हिल नहीं पा रहे थे.

ऊँट का नाच बहुत अजीब लग रहा था. उसके बड़े-बड़े पैर इधर-उधर जा रहे थे और उसकी गर्दन अजीब तरह से हिल रही थी. देखते ही देखते, ऊँट का पैर फिसला और वह ज़ोर से ज़मीन पर गिर पड़ा! पूरा दरबार ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा. कोई ताली नहीं बजा रहा था. राजा शेर को गुस्सा आ गया और उसने कहा, ऊँट! अगर किसी को कोई कला नहीं आती, तो उसे जबरदस्ती दिखाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए. यह नाचने का काम तुम्हारे लिए नहीं है.

बेचारा ऊँट शर्मिंदा हो गया और सिर झुकाकर वापस चला गया.

सीख जो हमें समझनी चाहिए रास्ते में ऊँट को बंदर मिला. बंदर मुस्कुराया और बोला, दोस्त, हर किसी की अपनी-अपनी खूबियाँ होती हैं. मैं छोटा और फुर्तीला हूँ, इसलिए मैं नाच सकता हूँ. लेकिन तुम बड़े और ताकतवर हो, तुम दूसरे कामों में बेहतर हो सकते हो.

ऊँट को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने कहा, तुम सही कह रहे हो, बंदर भाई. मुझे अपनी ताकत और खूबियों पर ध्यान देना चाहिए, न कि दूसरों की नकल करनी चाहिए. उस दिन से ऊँट ने कभी जलन नहीं की और अपनी विशेषताओं को पहचानकर अपने हुनर को निखारने लगा.

कहानी से सीख - हर किसी की अपनी खूबियाँ होती हैं. दूसरों की नकल करने से कुछ नहीं मिलता, बल्कि खुद को पहचानना ज़रूरी है. जो काम हमारे बस का नहीं, उसमें जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर:- 1. ऊपर से एक मछली गायब, 2. दूसरी मछली का कलर अलग, 3. मछली के पंख की डिजाइन अलग, 4. मछली की आंख बंद, 5. टीले का एक खोल गायब, 6. टीले की साइड वाली मछली नहीं है, 7. नीचे लगी पत्ती गायब, 8. नीचे वायर के बीच लगा हुआ बाक्स

बूझो तो जानें

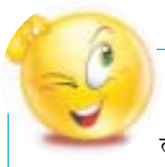

- हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़े थी, राजाजी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी?
  जवाब- भुट्टा
- पहेली- सुबहङ्कसुबह ही आता हूँ, दुनिया की खबर सुनाता हूँ, बिन मेरे उदास हो जाते, सबका प्यारा रहता हूँ.
  जवाब- अखबार
- पहेली-वह क्या है जिसे इस्तेमाल करने से पहले तोड़ना पड़ता है?
  जवाब- अंडा
- साल के किस महीने में 28 दिन होते हैं?
  जवाब- साल के सभी महीनों में 28 दिन होते हैं.
- काला रंग मेरी शान, सबको मैं देता हूँ ज्ञान, शिक्षक करते मुझे पर काम, नाम बताकर बनो महान.
  जवाब- ब्लैकबोर्ड
- 2 बेटे और 2 पिता फिल्म देखने गए, उनके पास 3 टिकट थे, फिर भी सबने फिल्म देखी, कैसे?
  जवाब- क्योंकि वे 3 लोग ही थे, दादाजी, पिताजी और बेटा
- वह क्या है, जो खरीदो तो काला, इस्तेमाल करो तो लाल और फेंको तो सफेद होता है?
  जवाब- कोयला
- प्रथम कटे तो दर हो जाऊँ, अंत कटे तो बंद हो जाऊँ, केला मिले तो खाता जाऊँ, बताओ मैं हूँ कौन?
  जवाब-बंदर
- दो सुंदर लड़के, दोनों एक रंग के, एक बिछड़ जाए तो दूसरा काम न आए.
  जवाब- जूते
- एक थाल मोतियों भरा, सबके सिर पर उल्टा धरा, चारों ओर फिरे वो थाल, मोती उससे एक न गिरे.
  जवाब- आकाश और तार

भूल भुलैया

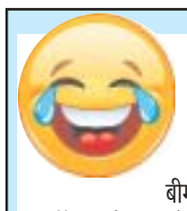

आर्ट एंड क्राफ्ट

ऐसे बनाएं पढ़ने का तकिया

पढ़ने का तकिया एक मजेदार और सरल क्राफ्ट प्रोजेक्ट है, जिसे आप घर में मौजूद सामग्री से बना सकते हैं. यह तकिया बच्चों के लिए खास तौर पर उपयोगी है जो पढ़ने के शौकीन होते हैं, क्योंकि यह उन्हें आराम से पढ़ने में मदद करता है. सबसे अच्छी बात यह है कि यह एक ष्ठद्बङ्घ प्रोजेक्ट है, जिसे बच्चे खुद बना सकते हैं, जिससे पढ़ाई का समय और भी मजेदार बन सकता है.

इस आसान विधि से बच्चे अपना खुद का व्यक्तिगत पढ़ने का तकिया बना सकते हैं और इसका उपयोग पढ़ाई के दौरान आराम से कर सकते हैं. यह एक बेहतरीन तरीका है बच्चों के लिए रचनात्मकता बढ़ाने का, जिसमें वे नया कौशल जैसे काटना, चिपकाना और गोंद लगाना सीख सकते हैं. यह प्रोजेक्ट बच्चों के लिए एक शानदार एक्टिविटी हो सकता है, जिसे वे किसी भी दिन बना सकते हैं.

सामग्री-
चाकू या कैंची,
फोम बोर्ड,
रसोई में इस्तेमाल किया जाने वाला तौलिया (27 सै. मीटर से 65 सै. मीटर),
तकिया (30 सै. मीटर से 40 सै. मीटर),
ड्रॉइंग पिंस, पेंट ब्रुश,
गोंद

विधि-
- फोम बोर्ड काटें- चाकू या कैंची की मदद से फोम बोर्ड में से 25 बाय 35 सै. मीटर का चतुर्भुज काट लें. यह आपके पढ़ने के तकिए का आधार बनेगा.
- तौलिया और तकिया तैयार करें-रसोई के तौलिये को एक सपाट सतह पर रखें. इसके बीच में कटा हुआ फोम बोर्ड रखें और इसके ऊपर तकिया रखें.
- तौलिया लपेटें- अब तौलिये को तकिया और फोम बोर्ड के ऊपर इस तरह से लपेटे जैसे आप किसी चीज़ को गिफ्ट पेपर में लपेटते हैं. इसके सभी कोनों पर ड्रॉइंग पिन लगा दें.
- गोंद लगाएं- कुछ पिन्स को हटा कर उसकी जगह पर गोंद से चिपकाएं. आप गोंद को पेंटिंग ब्रुश की मदद से चिपका सकते हैं. जब आप सारे कोनों पर गोंद लगा दें, तो उसे सूखने के लिए छोड़ दें.
- फिनिशिंग टच-जब गोंद सूख जाए तो सारी पिंस हटा दें. अब आपका पढ़ने का तकिया तैयार है!

हंसी-ठिठोली

- डॉक्टर के पास पहुंच पप्पू, बोला मैं बीमार हूं
  डॉक्टर ने पप्पू से कहा- आपकी एक किडनी फेल हो गई है...
  पप्पू रोने लगा, और कुछ देर बाद आंसू पोंछते हुए बोला.....ये तो बता दीजिये डॉक्टर साहब कि मेरी किडनी आखिर कितने नंबर फेल से हुई?
- सेठ (नौकर से)- जरा देखना...कितना टाइम हो रहा है?
  नौकर- मुझे टाइम देखना नहीं आता.
  सेठ- अच्छा कोई बात नहीं.ये देखकर बताओ कि बड़ी सुई कहां है और छोटी सुई कहां है?
  नौकर- दोनों सुइयां घड़ी के अंदर हैं.
- सोनू- यार मोनू आज सुबह-सुबह एक बिल्ली ने मेरा रास्ता काट दिया.
  मोनू- अच्छा फिर क्या हुआ?
  सोनू- फिर क्या आगे जाकर उस बिल्ली का एक्सीडेंट हो गया. हमसे पंगा लिया...
- पिता ने पूछा- बेटा तू फेल कैसे हो गया?
  बेटा- पापा पेपर में प्रश्न ही ऐसे आए थे जो मुझे पता नहीं थे
  पिता- अच्छा तो फिर तुमने उत्तर कैसे लिखे?
  बेटा- मैंने भी उत्तर ऐसे लिखे, जो मास्टर को पता नहीं थे.
- टीचर- बताओ तुम्हार होमवर्क कहां है...
  पप्पू- मैडम फेसबुक पर चेक करिए, मैंने स्क्रीनशॉट अपलोड कर दिए हैं और आपको टैग भी कर दिया है.

सूर्य घड़ी का इतिहास और विकास

ईसा से 800 वर्ष पूर्व मिस्रवासियों ने पहली बार सूर्य घड़ी का आविष्कार किया था. ईसा से 700 वर्ष पूर्व, ईसाई आह नामक पैगंबर ने अपने ग्रंथ में सूर्य घड़ी का उल्लेख किया था.

सूर्य घड़ी का प्रारंभिक स्वरूप- सूर्य घड़ी को अंग्रेजी के रुअक्षर के आकार की डंडी की मदद से बनाया जाता था. इस डंडी को पूर्व दिशा में रखा जाता था और सूर्य की छाया के आधार पर समय मापा जाता था. ईसा से 300 वर्ष पूर्व, यूनानी खगोलशास्त्री बेरोसस ने सूर्य घड़ी में सुधार किए और उत्तर ध्रुव की ओर डंडी झुकाकर अधिक सटीक समय मापने की कोशिश की.

ग्रीक और यूरोप में सुधार- ग्रीक वैज्ञानिकों ने ज्यामिति के उपयोग से सूर्य घड़ी को और परिष्कृत किया एथेंस के घंटाघर में आठ अलग-अलग सूर्य घड़ियां लगाई गई थीं, जो उस समय की उन्नत घड़ियों में से एक थीं. यूरोप के पुनर्जागरण काल में सूर्य घड़ियों का निर्माण एक लाभकारी व्यवसाय बन गया. पोर्टेबल सूर्य घड़ियां और कैलेंडर युक्त घड़ियां बनाई गईं, जिन्हें यात्री अपने साथ ले जाते थे.

चंद्र घड़ी का आविष्कार- 1581 में जर्मन खगोलशास्त्री क्रिस्टोफर क्लेवियस ने चंद्र घड़ियों का निर्माण शुरू किया, जो रात के समय भी समय मापने में सहायक थीं. मशीनी घड़ियों का आविष्कार और सूर्य घड़ी का पतन

पहली मशीनी घड़ी- सन 990 ईस्वी में पहली मशीनी घड़ी बनाई गई, जिसका श्रेय फ्रांसीसी पोप सिल्वेस्टर द्वितीय और बेनाडिक्टाइन भिक्षुओं को दिया जाता है. धीरे-धीरे मशीनी घड़ियों ने सूर्य घड़ियों की जगह ले ली.

प्रेरक प्रसंग

वीरता और बलिदान की अद्वितीय मिसाल : छत्रपति संभाजी महाराज

छत्रपति संभाजी महाराज मराठा साम्राज्य के दूसरे शासक थे, जो छत्रपति शिवाजी महाराज के पुत्र थे. वे न केवल एक साहसी योद्धा, बल्कि एक प्रतिभाशाली प्रशासक और रणनीतिकार भी थे. उनकी वीरता और बलिदान ने भारतीय इतिहास में उन्हें अमर योद्धा बना दिया.

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा- संभाजी महाराज का जन्म 14 मई 1657 को पुरंदर किले (महाराष्ट्र) में हुआ था. वे बचपन से ही बहुत बुद्धिमान और बहुभाषाविद थे. उन्होंने संस्कृत, मराठी, हिंदी, फारसी और पोर्तुगीज भाषाओं में गहरी पकड़ बना ली थी. मात्र 9 वर्ष की उम्र में, उन्हें औरंगजेब के दरबार में एक संधि के तहत भेजा गया, लेकिन वहां उन्होंने मुगलों के षड्यंत्रों को करीब से समझा और अपनी कूटनीतिक बुद्धिमत्ता को विकसित किया.

छत्रपति की उपाधि और शासनकाल- शिवाजी महाराज के निधन (1680) के बाद, संभाजी महाराज ने 1681 में मराठा सिंहासन संभाला. उन्होंने शासन के दौरान मराठा साम्राज्य को और अधिक सशक्त और संगठित किया. उन्होंने मुगलों, पुर्तगालियों, सिद्दियों और अंग्रेजों के खिलाफ निडर होकर युद्ध लड़ा.

संभाजी महाराज बनाम औरंगजेब- औरंगजेब ने मराठा साम्राज्य को खत्म करने के लिए कई बार आक्रमण किया, लेकिन संभाजी महाराज ने हर बार उसका डटकर सामना किया. 1689 में, मुगलों ने विश्वासघात करके संभाजी महाराज को पकड़ लिया. औरंगजेब ने उनसे इस्लाम कबूल करने के लिए कहा, लेकिन वीर संभाजी महाराज ने धर्म पर अडिग रहते हुए यातनाएं सहन कीं और अपना बलिदान दे दिया. 11 मार्च 1689 को उन्हें क्रूर यातनाओं के बाद शहीद कर दिया गया, लेकिन वे हिंदू स्वराज्य के लिए अडिग रहे.

संभाजी महाराज से हमें क्या सीख मिलती है?- धर्म और स्वाभिमान से समझौता नहीं करना चाहिए. कठिन परिस्थितियों में भी साहस और धैर्य बनाए रखना चाहिए. राष्ट्र और संस्कृति की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए.

बिंदु मिलाओ

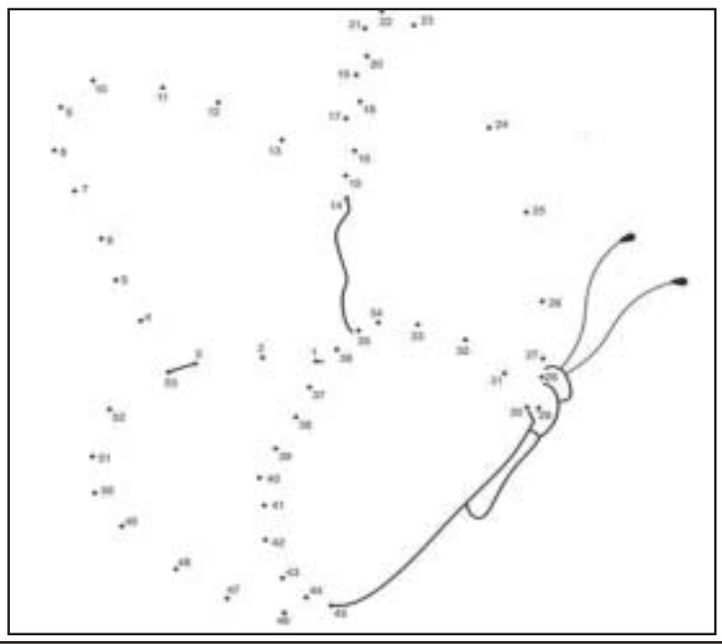

रंग भरो

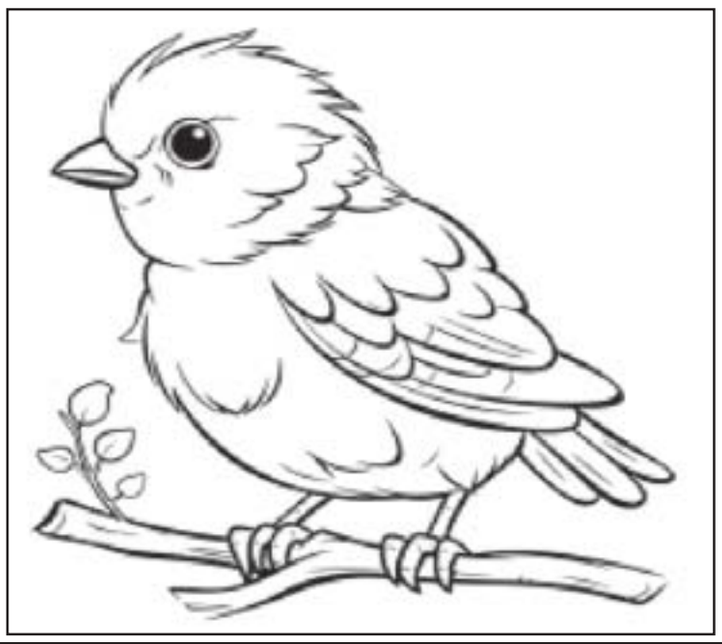

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.